Date - 21-05-2020

Dr. Sanehlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. - Snehababli 1987@gmail.com
Cont. no. - 8409587640
Class - B.A.I (Hons.)

Topic - Conception of Jagat: Ramanuja

Scanned with CamScanner

जगत विचार

रामानुज के अनुसार सृष्टि वास्तविक है। यह जगत उतना ही है जितना ब्रह्म। रामानुज का यह सृष्टि विचार ब्रह्म-परिणामवाद कहलाता है जो सत्कार्यवाद का एक रूप है। सत्कार्यवाद के अनुसार कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व कारण में सत् अर्थात् विद्यमान रहता है। कार्य कोई नवीन उत्पत्ति नहीं अपितु कारण का प्रकट स्वरूप है। जो कारण में अव्यक्त रहता है, कार्य में वही केवल व्यक्त हो जाता है। ब्रह्म-परिणामवाद यह बताता है कि सृष्टि ब्रह्म का वास्तविक परिणाम है। यह सम्पूर्ण जगत ब्रह्म के विशेषण - अंश (चित-अचित) का वास्तविक रूपान्तरण है। इसी कारण जगत भी सत् है। इसके विपरीत विपरीत शंकर जगत को ब्रह्म का विवर्त मानते थे क्योंकि वे ब्रह्म - विवर्तवाद के समर्थक हैं।

	शंकर और रामानुज के ब्रह्म विचार का तुलनात्मक अध्ययन	
	शंकराचार्य	रामानुज
(1.)	निर्गुण ब्रह्म ही ही अन्तिम परम सत्ता है।	सगुण ब्रह्म या ईश्वर ही अन्तिम या परम सत्ता है।
(2.)	निर्गुण और सगुण ब्रह्म में (ईश्वर) में भेद करते हैं।	निर्गुण एवं सगुण का भेद स्वीकार्य नहीं है।
(3.)	ईश्वर अन्तिम सत्ता नहीं है। वह सगुण ब्रह्म है। यह व्यवहारिक जगत की सर्वोच्च सत्ता है।	व्यवहार एवं परमार्थ का भेद मान्य नहीं है।
(4.)	ब्रह्म ~~xxx~~ सजातीय, विजातीय एवं स्वगत भेद से रहित है।	ब्रह्म में स्वगत भेद है।

Scanned with CamScanner

	शंकराचार्य	रामानुज
(5)	निर्गुण ब्रह्म उपासना का विषय नहीं है।	ब्रह्म या ईश्वर उपासना का विषय है।
(6)	ब्रह्म अवर्णनीय है। भावात्मक रूप से वर्णन नहीं किया जा सकता। उसका वर्णन 'नेति-नेति' रूप में किया जा सकता है।	'नेति-नेति' सूत्र ब्रह्म में हीन या हेय गुणों के अभाव को संकेतित करता है। ब्रह्म वास्तव में सगुण ही है।
(7)	निर्गुण ब्रह्म व्यक्तित्वविहीन (Impersonal) है।	ब्रह्म या ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण (Personal) है।
(8)	शंकर का ब्रह्म विचार अद्वैतवाद है। इसके अनुसार पारमार्थिक दृष्टि से ब्रह्म ही एकमात्र सत् है, जगत् मिथ्या है और जीव ब्रह्म से अभिन्न है।	रामानुज का ब्रह्म-विचार विशिष्टाद्वैत है। वे भी ब्रह्म की एकमात्र परम सत्ता को स्वीकार करते हैं, परन्तु उसे चित् और अचित से विशिष्ट मानते हैं।

Scanned with CamScanner